चीन में अंधविश्वास और अफवाह फैलाने वालों की खैर नही

चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने फैसला लिया है कि अफवाह फैलाने वाले धार्मिक लोगों को कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्यता से निकाला जायेगा. हालांकि वहां का संविधान नागरिकों को धर्म की आजादी है, पर कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों को इस मामले में शिक्षित किया जायेगा. वे धरम की अवैज्ञानिक रीतियों को नही मान सकते.

साथ ही यह भी कहा गया है कि किसी भी पार्टी सदस्य और अधिकारी को पार्टी और समाज में राजनैतिक अफवाह फैलाने वालों को सहन नही किया जायेगा . वहां पर गहरे से जड जमाये भ्रष्टाचार और धार्मिक आग्रहों से चिपके पार्टी सदस्यों को बाहर का रास्ता दिखाया जाएगा. जिन्होंने कानून तोडा है, उन पर मुकदमा चलेगा या पार्टी से बाहर का रास्ता दिखाया जाएगा। पार्टी सदस्य और अधिकारी ,जनता द्वारा दी गई शक्तियों का दुरुपयोग नहीं कर सकते। पार्टी को बचाने के लिए वफादारी, अनुशासन, साफसुथरा और ईमानदार होना सबसे ज्यादा जरूरी है। किसी को भी पार्टी की एकता को नुकसान पहुंचाने की इजाजत नही है। पार्टी के सदस्य द्वारा सत्ता का दुरुपयोग या व्यवहार का मुकाबला करें। हमारा संविधान धर्म को मानने की आजादी देता है। पार्टी नास्तिक है, अतः तमाम सदस्यों को भी वैसा ही होना चाहिए.

सुधारों के नये नियमों में कहा गया है कि पार्टी के सदस्यों के धार्मिक विश्वासों को शिक्षा द्वारा मजबूत किया जायेगा।

अगर वे शिक्षा और मदद के बाद भी नही बदलते और धार्मिक आग्रहों को नही छोडते तो उन्हें पार्टी छोड़ने के लिए कहा और प्रोत्साहित किया जायेगा। जो धर्म का इस्तेमाल जनता को उकसाने और उत्तेजना फैलाने के लिए करते हैं, उन्हें पार्टी से निकाल दिया जायेगा। किसी को भी देश के इतिहास को तोड़ने-मरोडने की अनुमति नही दी जा सकती है। आओ हम भी सोचें और सीखें।

-मुनेश त्यागी.

200 बसों का .....

पेज एक का शेष

हरियाणा रोडवेज़ की बसें चलायीं। कुछ वर्ष तो इनसे राज्य को अच्छा खासा मुनाफ़ा भी हुआ। लेकिन शासन-प्रशासन में बढते निकम्मेपन व भ्रष्टाचार ने न केवल सारा मुनाफ़ा लील लिया बल्कि घाटा और जिम्मे पड़ने लगा।

आज स्थिति यह है कि हरियाणा सरकार अपनी बसों को चलाने में पूरी तरह से विफ़ल हो चुकी है। कुप्रबंधन के चलते आज न तो इनके पास पर्याप्त स्टाफ़ हैं न वर्कशॉप हैं और न ही कर्मचारियों के साथ अच्छे सम्बंध हैं। आय दिन प्रबन्धन व कर्मचारियों के बीच टकराव के चलते चक्का जाम एक आम सी बात हो गयी है। जिसके चलते यात्रियों को काफ़ी भुगतना पड़ता है। सरकार की कार्यशैली को देखते हुये लगता है कि इस विभाग को बंद करके निजी कम्पनियों को सौंप दिया जायेगा। इन परिस्थितियों को देखते हुये बड़ी आसानी से समझा जा सकता है कि नगर निगम शहर वासियों को किस तरह की परिवहन सेवा दे पायेगा।

हां इसके नाम पर जनता का सैंकड़ों करोड़ रुपया हड़पने के लिये निगम अधिकारियों व राजनेताओं को जरूर मिल जायेगा। इसके नाम पर जगह-जगह बस डिपो, बस टर्मिनल व बस क्यू सेल्टर बनाने के नाम पर भ्रष्टाचारी अच्छी-खासी चांदी काटेंगे। यदि सरकार की नीयत वास्तव में ही शहर वासियों को परिवहन सेवा देने की इच्छा है तो आसान शर्तों पर आम लोगों को ही मिनी बसें चलाने के परमिट ज़ारी करे और उन्हें बिना सरकारी लूट-खसूट के चलने दे।

दाऊद इब्राहिम.....

पेज एक का शेष

में पैदा सुधा अपना जीवन बड़े ठाठ से वहीँ बिता सकती थी, परंतु अमेरिका की चकाचौंध छोड़ उन्होंने छत्तीसगढ़ के आदिवासिओं को सामाजिक न्याय दिलाना ज्यादा अहम समझा और उसे देश को अलविदा कह आईं जहाँ जाने को हमारे प्रधान सेवक कपड़े इस्त्री कराये बैठे रहते हैं।

गिरफ्तार करने गए पुलिस के अधिकारी वारंट को मराठी भाषा में लिख कर ले गए। जबकि फरीदाबाद पुलिस के सहयोग से बाद में उसे हिंदी में लिखा गया। वहीं हैदराबाद यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर वरवर राव को गिरफ्तार करने के बाद उनकी बेटी से सवाल किया गया कि आपका पति बेशक दलित है पर आप तो ब्राह्मण हैं। आप गहने क्यों नहीं पहनती ? एक सामान्य विवाहिता स्त्री की तरह क्यों नहीं रहती ? क्यों आपके घर में वामपंथी विचारधारा की ही पुस्तकें हैं, कोई धार्मिक पुस्तक क्यों नहीं ? इतनी किताबें क्यों खरीदी हैं, फूले, अम्बेडकर के चित्र के अलावा भगवान की तस्वीर क्यों नहीं ? ऐसे बेतुके सवालों का क्या अर्थ निकाला जा सकता है ? यही कि मोदी जी की जान को खतरा राव के रहन सहन या उनकी बेटी के गहने न पहनने से है ?

इसी प्रकार अन्य आरोपियों से भाजपा की कुंठा यही है कि भगवा आतंकवाद और कार्पोरेट लूट के खिलाफ आवाज बुलंद करने में सबने कोई कसर उठा नहीं रखी। भीमा कोरेगांव से निकली पेशवाई जलन की लपटें नोटबंदी और राफेल डील जैसे सनसनाते मुद्दों को जला कर राख करने की एक चाल है। इसी के साथ अगर विरोधियों को भी नक्सल बता ठिकाने लगा दिया जाए तो आम के आम और गुठलियों के दाम जैसा ही होगा।

गनीमत है, इन सामाजिक कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी पर सुप्रीम कोर्ट एक दिन में बैठती है और सुनवाई करती है, कांग्रेस के अभिषेक मनु सिंघवी मुफ्त में मुकदमा लड़ रहे हैं। कई तरह के संगठनों का जनसैलाब सड़कों पर है और प्रशांत भूषण सरीखे वकील भी एक्टिव हैं। क्या यही तत्परता मुजफ्फरनगर में चंद्रशेखर रावण, और भीमाकोरेगाँव षड्यंत्र में गिरफ्तार अन्य दलितों के प्रति भी हमारा समाज दिखाता है ? वे अपनी बारी के इंतजार में महीनों से जेल में बैठे हैं।

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5
2. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
4. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे
5. राम खिलावन बल्लबगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने
6. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास
7. जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207

FASHION.IN

Available all types of ladies cotton kurties, Fancy Kurties, Jegin, legin, Fancy Top, T-Shirts, Trousers and imported material in wholesale price.

SPECIALITY IN FANCY TOP & FANCY KURTIES

लेडीज कपड़ों पर भारी छूट
एक बार सेवा का मौका अवश्य दें।

Address : 5M/22, N.I.T. FARIDABAD NEAR DAYANAND WOMEN COLLEGE, ST. JOSEPH CONVENT SCHOOL ROAD . 9911489490

गतांक की चीर-फ़ाड़

डॉ. जुगल किशोर गुप्ता

राफ़ेल मामले में कांग्रेस को अपनी जुबान और खोलनी चाहिये

मज़दूर मोर्चा के 26 अगस्त-01 सितम्बर 2018 के अंक में राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक व साहित्यिक मुद्दों पर महत्वपूर्ण समाचार प्रकाशित हुये हैं। आर्य समाज के मुख्य उद्देश्यों में से एक उद्देश्य शिक्षा का प्रचार तथा प्रसार करना था, जिसके लिये दयानंद ऐंग्लो-वैदिक (डीएवी) स्कूल व कॉलेज की एक श्रृंखला स्थापित की। डीएवी मैनेजमैंट, दिल्ली ने श्री दरबारी लाल की रहनुमाई में डीएवी शिक्षण संस्थाओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। परंतु फ़रीदाबाद में स्थापित डीएवी स्कूल ऑफ़ बिजनिस मैनेजमैंट ने स्वामी दयानंद व डीएवी के नाम को खूब बट्टा लगाया। इस संस्थान में विद्यार्थियों से मोटी फ़ीस तो ली जाती है परंतु उनको पढ़ाने के लिये उपयुक्त व योग्य प्राध्यापकों की कमी रहती है जिसके कारण परीक्षा भवन में संस्था के प्राध्यापकों व स्टाफ़ द्वारा विद्यार्थियों को नकल करायी जाती है जिसमें कुछ नाम 90 के दशक के दौरान चर्चित रहे हैं जैसे.....कोहली, एन के शर्मा, एक महिला स्टाफ़ आदि। 'धर्म की आड़ में चलता एक मुनाफ़ा संस्थान-घोटालों की पढ़ाई के लिये बेहतरीन डीएवी मैनेजमेंट कॉलेज' में इस संस्थान में व्याप्त बदहाली की विस्तृत चर्चा की गई है। क्या कभी एआईसीटीई, एमडीयू व डीएवी प्रबंध समिति की कुंभकरनी नींद खुलेगी और कुछ सुधार करेगी।

बेटी बचाओ बेटी पढाओ का नारा देने वाली खट्टर सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किये गये खोखले दावों पर स्वच्छता अभियान का 'अगवानपुर के स्कूल पर ठोका ताला, निकम्मी सरकार से निपटने को अब स्कूली छात्र उतरने लगे मैंदान में' में पर्दाफ़ाश किया गया है। इस विद्यालय में कक्षा में बैठने के लिये बैंच, पंखे व बिजली की व्यवस्था न होने तथा शिक्षकों की कमी के कारण छात्रों को संघर्ष के रास्ते पर आना पड़ा। अगवानपुर जैसी ही स्थिति पूरे प्रदेश के लगभग 90 प्रतिशत स्कूलों की है। लगभग यही स्थिति हरियाणा के सरकारी कॉलेजों की है जहां अधिकतर कॉलेजों में नियमित प्रिंसिपल व प्राध्यापकों की जगह इंचार्ज प्रिंसिपल तथा कॉन्ट्रैक्ट प्राध्यापकों व गेस्ट प्राध्यापकों से काम चलाया जा रहा है। इस बदहाली के सुधार के प्रति खट्टर सरकार बिल्कुल गंभीर नहीं है। इसका एक ही रास्ता बचा है कि विद्यार्थी व अभिभावक लामबंद होकर इस सरकार के विरुद्ध सड़क पर उतरे।

दिवंगत पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की अस्थि कलश यात्रा पूरे देश में घुमाने व श्रद्धांजलि सभा के बाद अस्थियों को नदियों में प्रवाहित करने के अभियान द्वारा बाजपेयी जी की उदारवादी छवि को चुनावों में भुनाने और इसे एक इवेंट बनाने की 'भतीजी का आरोप, 9 साल से अटल को भुले मोदी अमित शाह अस्थियों का कर रहे राजनीतिक व्यापार' में समीक्षा की गई है। कलश यात्रा व श्रद्धांजलि सभा के दौरान व मंच पर बैठे भाजपा नेता बिल्कुल गंभीर नहीं थे। छत्तीसगढ़ में रायपुर में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में मंच पर बैठे दो मंत्री ज़ोरदार ठहाका लाते दिखाई दिये। उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री जब वाहन में अस्थि कलश लेकर गये तब वे स्वयं तथा अन्य भाजपा नेता तो कुर्सियों पर बैठे परंतु अस्थि कलश को नीचे पैरों पर रखे हुये थे। इनसे स्पष्ट है कि भाजपा अटल जी की अस्थियों के प्रति कितनी संवेदनशील है व उनकी कितनी श्रद्धा है।

प्रधानमंत्री मोदी ने भाजपा पर अपना वर्चस्व बनाये रखने के लिये भाजपा के वरिष्ठ नेताओं अटल बिहारी बाजपेयी, लाल कृष्ण आडवाणी व मुरली मनोहर जोशी को खुड्डे लाइन लगाने हेतु भाजपा के संविधान की अवहेलना करते हुये एक मार्ग दर्शक मंडल का गठन किया जिसमें इन तीन नेताओं के साथ-साथ मोदी स्वयं तथा राजनाथ सिंह को भी रखा गया। भाजपा की इस अंदरूनी ऊठा-पटक व लाल कृष्ण आडवाणी तथा मुरली मनोहर जोशी की भाजपा में उपेक्षा का 'अटल बिहारी वाजपेयी इतने महान थे तो आडवाणी इतने बुरे कैसे हो गये ? में सटीक विश्लेषण किया गया है।

'राफ़ेल मामले में कांग्रेस को अपनी जुबान और खोलनी चाहिये' में अनिल अम्बानी की कम्पनी रिलायंस डिफ़ेंस द्वारा की गई विभिन्न डील में व्याप्त भ्रष्टाचार का आरोप लगाया गया है, जैसे रिलायंस डिफेंस कम्पनी व फ्रांस की कम्पनियां डास्को तथा थेल्स के बीच समझौते और रिलायंस डिफेंस कम्पनी व रूस की कम्पनी असमजअन्ते से 42 हजार करोड़ रुपये का समझौता आदि। इसके अतिरिक्त 10 हफ़्तों से कम समय में ही नागपुर जेसी जगह पर 289 एकड़ ज़मीन धीरू भाई अम्बानी एयरोस्पेस पार्क के लिये दी गई। ये समझौते मोदी सरकार के साथ के बिना सम्भव नहीं थे। प्रधानमंत्री मोदी व रक्षामंत्री दोनों स्वयं राफ़ेल डील पर जवाब देने की बजाए रहस्यमय चुप्पी साधे हुये हैं और मोदी सरकार ने बचाव में टीवी अभिनेत्री पल्लव जोशी, वित्तमंत्री अरूण जेटली आदि को आगे कर दिया है जिनको इस डील के बारे में कोई जानकारी नहीं है।

मोदी सरकार ने मीडिया पर पूरी तरह से नकेल कस रखी है। अब सम्पादकों का काम सत्ता के प्रचार के अनुकूल कटेंट बनाये रखना है और यदि कोई सम्पादक इन निर्देशों की अवहेलना करता है उस मीडिया अथवा चैनल को घुटने टेकने के लिये परेशान किया जाता है। जिसका 'क्या सत्ता के सामने भारतीय मीडिया रेंगने लगा है ?' में खुलासा किया गया है। जनहित के मुद्दे तथा वे मुद्दे जो मोदी सरकार को असहज कर दे मीडिया से गायब हो गये हैं।

मोदी सरकार के साढ़े चार साल के शासन के दौरान मोदी जी द्वारा किये गये खोखले दावों व वादों की पोल खुलने लगी है और मोदीजी की नीतियों पर सवाल उठने लगे हैं। देश का सामाजिक ताना-बाना बिगड़ने लगा है और लोगों को महसूस होने लगा है कि धीरे-धीरे आरएसएस देश पर अपनी पकड़ मजबूत करने में लगा है। इसलिये लोगों का मोदी सरकार से विश्वास उठने लगा है, जो 'कहीं भाजपा अपनी जमीन तो नहीं खो रही है' तथा 'मोदी ने पूछा सवाल, मुझसे इतनी नफ़रत क्यों ? देवदन चौधरी ने दिया मुंह तोड़ जवाब' से स्पष्ट है।

2019 के लोकसभा चुनाव के मद्देनज़र मोदी जी द्वारा नई-नई योजनाओं व झूठे वादे करने पर '2019 की ओर बढ़ते फ़ेंकू मोदी', राहुल द्वारा मोदी जी पर आरोप लगाने के बाद टीवी चैनलों पर राहुल के खिलाफ़ आक्रामक जवाबी हमला करने पर 'टीआरपी में उछाल ला दिया!! थैंक्स!! अगला स्टंट कब और कहां करेंगे ??-मोदी बनाम राहुल' तथा बाबरी मस्जिद विध्वंश व गोधरा कांड के उपरांत गुजरात में किये गये कत्ले आम पर वाजयेयी जी द्वारा कोई कार्यवाईन न कर पाने पर 'ब्लैक नेहरू-बाबरी-गोधरा' कार्टूनों द्वारा मोदी की नीतियों पर उपयुक्त कटाक्ष किये गये हैं।